राजस्थान सिविल सेवा अपील अधिकरण, जयपुर

अपील संख्या :–2376/2025

मनोज चंदालिया

–अपीलार्थी

बनाम

राजस्थान राज्य जरिये शासन सचिव एवं परिवहन आयुक्त, परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग, राजस्थान सरकार, शासन सचिवालय, जयपुर एवं अन्य।

–प्रत्यर्थीगण

आदेश की दिनांक : 07.04.2025

उपस्थिति :–

अपीलार्थी की ओर से : श्री जहांगीर आलम, अभिभाषक

प्रत्यर्थी विभाग की ओर से : श्री मनीष सिंह तोमर, अति.राजकीय अभिभाषक

समक्ष :– विकास सीतारामजी भाले, अध्यक्ष
अनन्त भंडारी, सदस्य (न्यायिक)

आदेश

1. मामले की आवश्यक प्रकृति को देखते हुए राजस्थान सिविल सेवा (सेवा मामलों के लिए अपील अधिकरण) अधिनियम, 1976 की धारा 4ए के उपबन्ध में शिथिलता प्रदान करने की प्रार्थना स्वीकार कर अपील पर सुनवाई की गई।
2. अपीलार्थी के अधिवक्ता का तर्क है कि अपीलार्थी वर्तमान में सहायक प्रशासनिक अधिकारी के पद पर ब्यावर में कार्यरत है। आलोच्य आदेश दिनांक 15.01.2025 (अनुलग्नक–2) के द्वारा अपीलार्थी का पदस्थापन/स्थानांतरण भिवाडी में किया गया है। अपीलार्थी के अधिवक्ता का मुख्य रूप से तर्क है कि अपीलार्थी की माता वरिष्ठ नागरिक है, जो अधिकतर बीमारी से पीडित रहती है, जिनका ईलाज अजमेर में चल रहा है। अपीलार्थी के दो छोटे बच्चे हैं एवं अपीलार्थी की पत्नी ब्यावर में ही प्राईवेट जॉब कर रही है। ऐसे में परिवार की देखभाल की जिम्मेदारी अपीलार्थी पर ही है। अपीलार्थी का 400 किमी. दूर स्थानान्तरण किया गया है, जिससे अपीलार्थी को विभिन्न समस्याओं का समाना करना पडेगा। अतः अपीलार्थी का स्थानान्तरण आदेश स्थगित रखा जाए।
3. हमनें अपीलार्थी द्वारा दिये गये तर्कों पर विचार किया।
4. पत्रावली के अवलोकन से प्रकट होता है कि अपीलार्थी का स्थानांतरण प्रशासनिक आवश्यकता में किया गया है। जहां तक अपीलार्थी की व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्याओं का संबंध है तो हम इस आधार पर अपीलार्थी के

स्थानांतरण आदेश में कोई हस्तक्षेप करना उचित नहीं पाते हैं। यह नियोक्ता के विवेक पर निर्भर करता है कि वह प्रशासनिक व राज्यहित में अपने किस कार्मिक की सेवाएं किस स्थान पर प्राप्त करें। नियोक्ता द्वारा लिये गये निर्णय में इस अधिकरण को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है, जब तक की उक्त निर्णय दुर्भावनापूर्ण या नियम–विरूद्ध तरीके से पारित नहीं किया गया हो।

5. उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम इस अपील में कोई बल होना नहीं पाते हैं। अतः अपील खारिज की जाती है। यहां यह भी स्पष्ट किया जाता है कि अपीलार्थी अपनी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्याओं के संबंध में प्रत्यर्थी विभाग के समक्ष अपना अभ्यावेदन प्रस्तुत करने के लिए सदैव स्वतंत्र है।

(अनन्त भंडारी)
सदस्य (न्यायिक)

(विकास सीतारामजी भाले)
अध्यक्ष